छन्द राउ जइतसी रउ

(वीठू सूजइ रउ कहियउ)

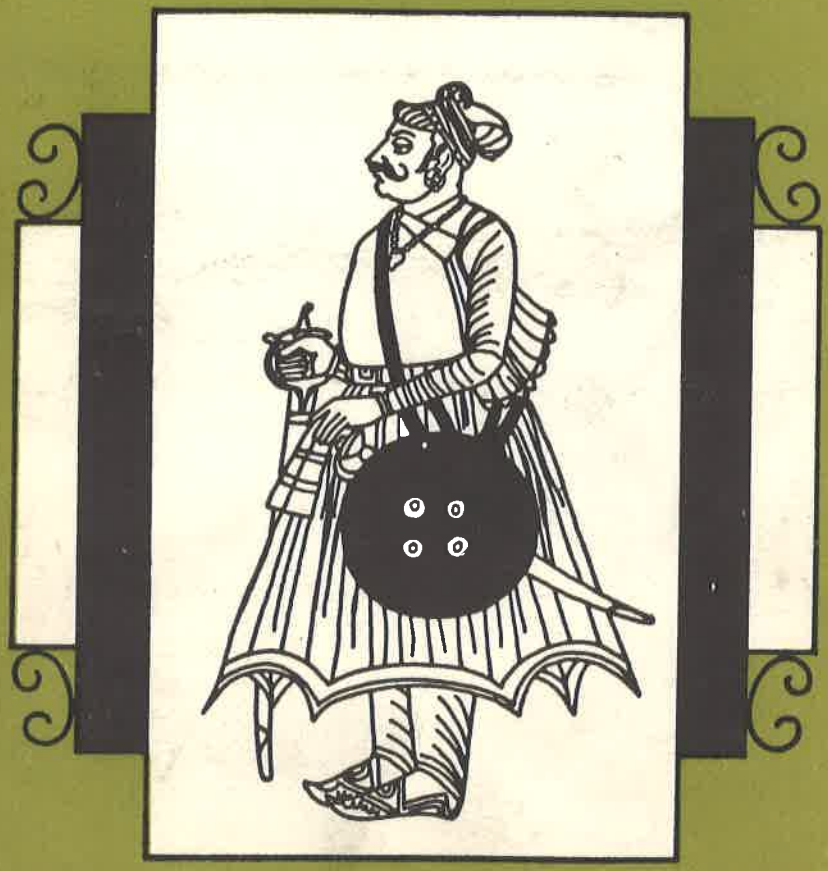

सम्पादक: मूलचन्द 'प्राणेश'

प्रकाशकीय

भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान के प्रकाशन क्रम में 'छन्द राउ जइतसी रउ, विठू सूजइ रउ कहियउ' को प्रकाशित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता होरही है। इसके पूर्व नागदमण, रणमल्ल छंद आदि प्राचीन राजस्थानी काव्यों का प्रकाशन किया जा चुका है। जो विद्वानों के द्वारा प्रशंसित हुए हैं और हमारे लिए उत्साहवर्द्धक।

प्रस्तुत काव्य ग्रंथ राजस्थान के लिए ही नहीं सम्पूर्ण भारत के लिए गौरव का विषय है जिसमें साम्राज्यवादी मुगल वाहिनी को राजस्थान के एक राजा ने पराजित करके भगा दिया और अपनी स्वतंत्र सत्ता को बनाए रखा।

इसी क्रम से संस्था द्वारा कवि वर माधोदास दधवाड़िया कृत राम रासो को प्रकाशित करने की योजना है। जिस के लिए सम्पादन का प्रारम्भिक कार्य चालू हो चुका है। यह काव्य कृति भी जन-साधारण की सेवा में यथा संभव शीघ्र ही प्रस्तुत की जा सकेगी।

'छन्द राउ जइतसी रउ' के प्रस्तुत प्रकाशन के सम्बन्ध में जो विद्वान अपनी सम्मति भेजने की कृपा करेंगे, हम उनका हार्दिक स्वागत करेंगे।

इतने सुन्दर व उत्तम सम्पादन के लिए सम्पादक श्री मूलचन्द 'प्राणेश' व सुन्दर मुद्रण के लिए सांखला प्रिंटर्स हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

विजय दिवस, मार्गशीर्ष कृष्णा 4
सं. 2048 बीकानेर

मूलचन्द पारीक
मंत्री
भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर

सम्पादकीय

'छन्द राउ जइतसी रउ' राजस्थानी भाषा में सर्जित एक ऐतिहासिक काव्य कृति है। इसमें वीठू सूजा ने अपने आश्रयदाता बीकानेर के राव जैतसी द्वारा कामरां के विरुद्ध लड़े गये युद्ध का प्रामाणिक वर्णन किया है। इसी प्रकार की एक और रचना उपलब्ध है, जिसका उल्लेख डा. एल. पी. टैसीटोरी ने एक अज्ञात कवि की कृति बताते हुए सम्भावना व्यक्त की है कि हो सकता है यह कृति प्रख्यात छंदों के सर्जक वीठू मेह की हो। वीठू सूजा एवं वीठू मेह राव जैतसी के दरबारी कवि थे और उनमें परस्पर चाचा-भतीजे का रिश्ता भी था।

डॉ. एल. पी. टैसीटोरी ने सर्व प्रथम इस काव्यकृति के मर्म को पहचाना तथा उपलब्ध सभी प्रतियों के आधार पर पाठ सम्पादित करके विद्वज्जनों के सम्मुख रखा। परन्तु इस काव्य-कृति की जटिल भाषा एवं क्लिष्ट शैली के परिणाम स्वरूप जन-साधारण की तो बात ही क्या, बड़े-बड़े विद्वान भी इसके आशय को स्पष्ट नहीं कर सके।

स्व. श्री नरोत्तमदास जी स्वामी ने भी अपने मित्रों के साथ उक्त छंद के संपादन का कार्य हाथ में लिया था, परन्तु किन्हीं कारणों से वे इसे पूरा नहीं कर सके। 'रणमल्ल छंद' का सम्पादन करके मैं जब स्वामी जी को दिखलाने गया तो लौटते समय 'छन्द राउ जइतसी रउ' के संपादन का कार्य मुझे सौंपते हुए, इसे शीघ्रातिशीघ्र पूरा करने की ताकीद भी की। स्वामीजी ने उक्त छन्द के सम्पादन का जितना कार्य किया था, वह सामग्री भी मुझे सौंप दी।

मैंने नये सिरे से कार्य प्रारम्भ किया। छन्द के मूल-पाठ का आधार डॉ. एल. पी. टैसीटोरी द्वारा प्रकाशित पाठ को बनाया। विस्तार भय से पाठांतरों को सम्मिलित नहीं किया गया। वर्तमान कालिक शब्द-कोशों में छंद में प्रयुक्त शब्द ही नहीं मिले, तब अर्थ की तो बात क्या!

मैंने छंद में प्रयुक्त सभी शब्दों के निकटतम हिन्दी पर्याय देने का प्रयत्न किया है, परन्तु कितने ही शब्दों के हिन्दी में पर्यायवाची हैं ही नहीं, ऐसे शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत की गई है। इस कृति का ऐतिहासिक महत्त्व तो है ही, पर साथ ही भाषा-गत महत्त्व भी कम नहीं है। प्रस्तुत कृति का ऐतिहासिक, साहित्यिक एवं भाषा वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करना नितांत आवश्यक था, परन्तु मेरे इष्ट-मित्रों एवं

विद्वज्जनों का आग्रह इस कृति को हिन्दी-भावार्थ के साथ यथाशीघ्र प्रबुद्ध-पाठकों एवं जिज्ञासु विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाने का रहा। प्रस्तुत काव्य-कृति ने सम्पादित होकर पुस्तक का स्वरूप ग्रहण कर लिया, पर इसे देखने के लिए श्री स्वामी जी नहीं रहे ! नमन् !!

डॉ. शक्तिदान कविया ने प्रस्तुत काव्य कृति की विस्तृत, सटीक एवं विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना लिखी है, जिसके द्वारा काव्य में वर्णित सभी पक्षों का उद्घाटन हुआ है। पं. अक्षयचन्द्र जी शर्मा ने पुरावाक् लिखकर इस काव्य-कृति को आशीर्वाद प्रदान किया है, एतदर्थ आभारी हूँ।

प्रस्तुत-कृति को वर्तमान स्वरूप में प्रस्तुत करने का श्रेय श्री सत्यनारायणजी पारीक, डॉ. मनोहरजी शर्मा एवं श्री रामनिवासजी शर्मा को है। भा. वि. मं. शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर के अधिकारीगण विशेष धन्यवाद के पात्र हैं, क्योंकि इनके सद्प्रयास के बिना प्रस्तुत कृति पुस्तक का स्वरूप ही ग्रहण नहीं कर पाती।

देवोत्थान एकादशी
सं. 2048 वि.
(18 नवम्बर, 1991 ई.)

मूलचन्द 'प्राणेश'
झझू (बीकानेर)